## GODDA COLLEGE, GODDA (B.Ed)
### e-Learning Report

| S.No. | Date | Name of the Teachers | Subject | For Sem. 2/4/6 | Topic Taught | Mode adopted YouTube/Pdf/any other- | | | Line to downlode the study materials |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 10.04.2020 | Dr. Pankaj Kumar | B.Ed | II | अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत | Pdf | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |

P.Kumar

**क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धान्त / अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त :–**

- क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धांत का प्रतिपादन रुसी मनोवैज्ञानिक इवान पी० पावलव ने 1900 ई० में कुत्ते पर किये गये प्रयोग से सिद्ध किया है।
- इसे अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत या अनुबन्धित अनुक्रिया सिद्धांत भी कहा जाता है।
- इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति या जीव कुछ जन्मजात प्राकृतिक प्रवृतियाँ, प्रतिक्रियाएँ य अनुक्रियाएँ रखता है तथा ये प्रवृतियाँ, प्रतिक्रियाएँ किसी उपयुक्त प्राकृतिक उद्दीपक के उपस्थित होने पर प्रकट होती है। जैसे– भुखे व्यक्ति के सामने भोजन अपने पर मुँह में लार का आना या तेज शोर सुनने पर डर जाना प्राकृतिक या स्वाभावित अनुक्रियाएँ है जिनका उपयुक्त उद्दीपक के सामने होने पर व्यक्ति द्वारा व्यक्त करना पुर्णतः स्वाभाविक है।
- जब किसी अस्वाभाविक उद्दीपक को किसी स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार–बार प्रस्तुत किया जाता है तो अस्वाभाविक उद्दीपक का स्वाभाविक उद्दीपक की स्वाभाविक अनुक्रिया के साथ संबंध जुड़ जाता है तथा बाद में केवल अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रस्तुत होने पर व्यक्ति / जीव स्वाभाविक उद्दीपक की स्वाभाविक अनुक्रिया जिसे अनुकूलित अनुक्रिया या अनुबंधित अनुक्रिया कहते है, देने लगता है।
- अर्थात व्यक्ति / जीव के लिए अस्वाभाविक उद्दीपक स्वाभाविक उद्दीपक से अनुकूलित हो गया है।

पावलाव का प्रयोx **(Pavlovs Experiment)** :–

- इवान पी० पावलव ;अंदण च्च चंसवअद्ध वास्तव में एक शरीर वैज्ञानिक थे जिन्होंने क्रिया की दैहिकी ;चैलेपवसवहल व िक्पहमेजपवदद्ध का गहन अध्ययन किया है।
- पावलव ने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया है। अपने प्रयोग के दौरान कुत्ते को भोजन देते समय घंटी की आवाज करनी प्रारंभ की। अनेक बार ऐसा करने के बाद उसने केवल घंटी की आवाज की तथा खाना नहीं दिया। ऐसा करने पर उसने पाया कि केवल घंटी की आवाज सुनकर ही कुत्ते के मुँह से लार टपकता है।
- कुत्ते ने घंटी की आवाज को लार के आने से संबंधित या अनुबंधित कर लिया है। दूसरे शब्दों में कुत्ते ने सीख लिया कि घंटी की आवाज भोजन आने के संकेत है तथा उसके मुँह में लार आ जाती है, चाहे भोजन नहीं आता हो।

| अनुबंधन के पूर्व | अनुबंधन के दौरान | अनुबंधन के बाद |
|---|---|---|
| घंटी – प्रतिक्रिया नही<br>भोजन – लार | घंटी<br>+ – लार<br>भोजन | घंटी – लार |

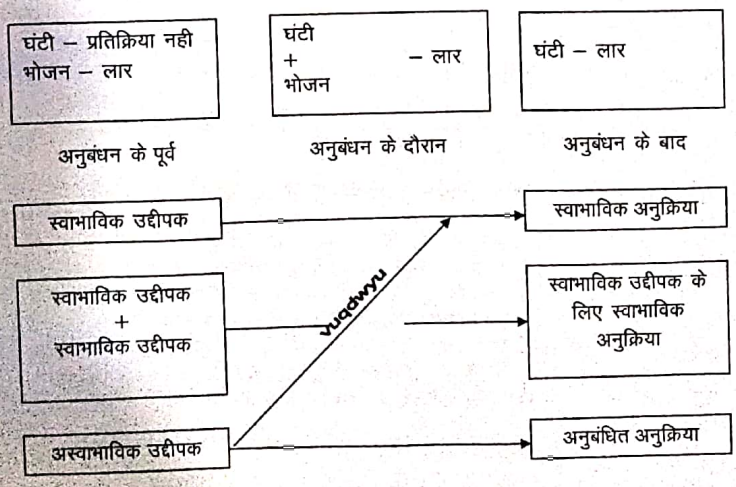




क्लासिकल अनुबंध का सिद्धांत

Scanned with CamScanner

**अनुबंधन की दशाएँ ;Conditions for Condtioning) :–** अधिगम के क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धांत के अनुसार अनुकूलन के प्रमुख चार दशाएँ महत्वपूर्ण है :–

1. स्वाभाविक उद्दीपक व अनुक्रिया का एक निश्चित क्रम होना चाहिए। अस्वाभाविक उद्दीपक की प्रस्तुति के लगभग आधा सेकेन्ड के उपरान्त स्वाभाविक उद्दीपक प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यदि समय अन्तराल कम या अधिक होता है तो सीखना प्रभावशाली नहीं होता है।

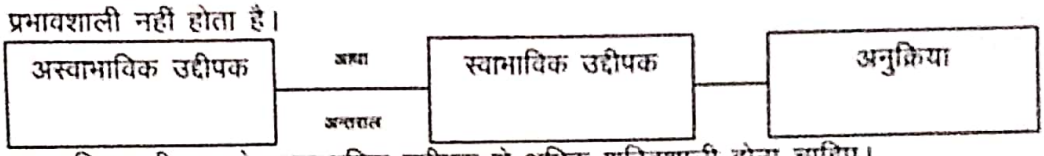




2. स्वाभाविक उद्दीपक को अस्वाभाविक उद्दीपक से अधिक शक्तिशाली होना चाहिए।
3. अस्वाभाविक उद्दीपक को स्वाभाविक उद्दीपक के साथ अनेक बार दोहराना होगा तब ही अनुबन्धन होगा एवं अस्वाभाविक उद्दीपक में स्वाभाविक उद्दीपक के गुण आयेंगे।
4. अनुबन्धन के समय उपयुक्त परिस्थितियाँ होनी चाहिए। अर्थात अनुबन्धन के समय कोई वाह्य अवरोध उपस्थित न हो।

**अनुबन्धन अनुक्रिया सिद्धांत के शिक्षा का स्वरुप/शैक्षिक निहितार्थ :–**

- अनुबन्धन अनुक्रिया धीरे–धीरे स्वभाव बन जाती है। स्वभाव का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।
- इस सिद्धांत की मदद से बालकों में अच्छी अभिवृत्तियाँ विकसित की जा सकती है।
- विभिन्न प्रकरणों को सीखने में जैसे– शब्दार्थ, गुणा, भाग, पहाड़े आदि को सीखाते समय अध्यापक इस सिद्धांत का प्रयोग कर सकता है।
- मानसिक रुप से अस्वस्थ एवं संवेगात्मक रुप से अस्थित बालकों के लिए उपचार में सहायक है।
- विभिन्न प्रकार के भय, घृणा, अन्धविश्वास आदि के वास्तविक कारणों को समझने में उपयोगी है।
- पढ़ाई–लिखाई, विद्वानों व अध्यापकों के प्रति छात्रों का उचित दृष्टिकोण विकसित करना।

**"स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धांत/सक्रिय अनुबंध सिद्धांत ";पददमतश्े व्यमतंदज ब्वदकपजपवदपदह जीमवतलद्ध :–**

- हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के प्राचार्य बी.एफ.स्कीनर ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन चूहों तथा कबुतरों पर प्रयोग के आधार पर किया है।
- "सक्रिय अनुबद्ध अनुक्रिया एक अधिगम प्रक्रिया है जिसमें अनुक्रिया को पुनर्बलन द्वारा अधिक सम्भावित बनाया जाता है तथा सक्रिय व्यवहार को सबल बनाया जाता है।
- व्यवहार की पुनरावृति तथ परिमार्जन उसके परिणामों के द्वारा निर्देशित होता है। व्यक्ति व्यवहार का संचालन करता है जबकि इसको बनाये रखना उसके परिणामों पर निर्भर करता है। इस प्रकार के व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया को क्रमशः क्रियाप्रसूत

Scanned with CamScanner

व्यवहार/उत्सर्जित व्यवहार और क्रियाप्रसूत अनुबंधन/उत्सर्जित अनुबंधन कहा जाता है।

- प्रयोज्य क अनुक्रियाओं का पुनर्बलन के लिए निमित होने के कारण इस सिद्धांत को नौमितिका या यान्त्रिक या साधनात्मक अनुबंधन सिद्धांत भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner